वैदिक उपासना पीठद्वारा प्रकाशित

शनिवार,पौष कृष्ण पक्ष,एकादशी, कलियुग वर्ष ५१२२ (९ जनवरी, २०२१)

वैदिक उपासना

राष्ट्र एवं धर्मके पुनरूत्थान हेतु समर्पित ऑनलाईन दैनिक वृत्त पत्र

धर्माचरण हेतु कष्ट उठाना, राष्ट्र हेतु समय देना एवं साधना हेतु त्याग करना, यह सनातन उपासना है।

e-mail : upasanawsp@gmail.com, website : www.vedicupasanapeeth.org.

कलका पंचांग

जयतु जयतु हिन्दुराष्ट्रं

१० जनवरी २०२१ का वैदिक पंचांग

कलियुग वर्ष – ५१२२ / विक्रम संवत – २०७७ / शकवर्ष - १९४२.....कलके पंचांगके सम्बन्धमें और जानकारी हेतु इस लिंकपर जाएं.....https://vedicupasanapeeth.org/hn/kal-ka-panchang-10012021

देव स्तुति

सप्ताश्वरथमारूढं प्रचण्डं कश्यपात्मजम्।
श्वेतपद्मधरं देवं तं सूर्यं प्रणमाम्यहम्॥

अर्थ : सात घोडोंवाले रथपर आरुढ, हाथमें श्वेत कमल धारण किए हुए, प्रचण्ड तेजस्वी कश्यपकुमार सूर्यको मैं प्रणाम करता हूं।

शास्त्रवचन

अशेषजगदंहसां किमपि नाम निर्णेजनम ।

अर्थ : श्रीभगवन नामकौमुदीमें वर्णित भगवान नाम महिमा : शेष जगतके समस्त पापोंको धो, बहा देनेवाला अद्भुत साधन भगवानका नाम है ।

****

चक्रायुधस्य नामानि सदा सर्वत्र कीर्तयेत् ।
नाशौचं कीर्तने तस्य स पवित्रकरो यतः ॥

अर्थ : चक्रपाणि श्रीहरिके नामोंका सदा और सर्वत्र कीर्तन करें ! उनके कीर्तनमें अशौच बाधक नहीं है; क्योंकि वे भगवान स्वयं ही सबको पवित्र करनेवाले हैं ।

धर्मधारा

१. हिन्दू राष्ट्र आवश्यक क्यों ? (भाग-३)

स्वतन्त्रता पश्चात प्रतिवर्ष लाखों हिन्दुओंका अहिन्दू पन्थोंमें धर्मान्तरण हो रहा है, ऐसा तो मुगलों और अंग्रेजोंके शासनकालमें भी हुआ करता था । इस स्थितिसे निपटनेमें निधर्मी लोकतन्त्र पूर्णतः असमर्थ है, यह स्पष्ट हो चुका है; अतः हिन्दू राष्ट्रकी स्थापना ही ऐसी सभी समस्याओंका एकमात्र समाधान है ।

****

२. ऐसे आश्रमको यदि गंगा मैया लील जाए तो आश्चर्य कैसा ?

पिछले वर्ष एक तीर्थ नगरीमें गंगा तटपर एक अत्यधिक प्रसिद्ध सन्तके आश्रममें जानेकी सन्धि मिली । आश्रम क्या था ? विदेशियोंको आकृष्ट करने हेतु भारतीय संस्कृतिकी

झलक देनेवाली एक 'तामझाम'युक्त 'दुकान' थी। आश्रमका इस परिसीमातक व्यापरीकरण हो गया था कि वहां घुसते ही मेरे सिरमें वेदना होने लगी। मन यह सब देख क्रन्दन करने लगा। ऐसे आश्रमको यदि गंगा मैया लील जाए तो आश्चर्य कैसा ? आश्रमके साधक अपने आश्रमकी ऊपरी दिखावटसे मुझे प्रभावित करनेका कोई प्रयास नहीं चूक रहे थे। मुझे उनकी 'मार्केटिंग' देखकर तरस आ रहा था। यदि ऐसे तथाकथित सन्त थोडा ध्यान अपनी साधनापर दें तो सम्पूर्ण विश्वसे उनके यहां भक्त स्वतः ही आकृष्ट हो जाएंगे ! और इस बार आयोजित महाकुम्भमें भी उनके शिविरसे व्यापरीकरणकी दुर्गन्ध आ रही थी।

****

३. गुरु शिष्यकी पात्रता अनुरूप ही ज्ञान देते हैं

भगवान श्रीकृष्णने गीताका ज्ञान, अर्जुनको ही क्यों दिया ? अन्य किसी पाण्डव अथवा कौरवको क्यों नहीं दिया ?

क्योंकि गीताके सन्देशको कृतिमें लानेका सामर्थ्य मात्र अर्जुनमें था। ईश्वरीय ज्ञान पात्रता अनुसार प्राप्त होता है। अर्जुनकी भक्ति श्रीकृष्णके प्रति यद्यपि साख्यभावयुक्त थी; परन्तु वे श्रीकृष्णको गुरु रूपमें देखते थे और गुरु शिष्यकी पात्रता अनुरूप ही ज्ञान देते हैं।

भगवान श्रीकृष्णने अर्जुनको गीताका ज्ञान पश्यन्ति वाणीमें कुछ क्षणोंमें दिया ! वह तो संजय और महर्षि व्यासकी साधनाका प्रताप था कि वह दिव्यज्ञान हमतक पहुंच पाया ! वाणी जितनी सूक्ष्म हो जाती वह उतनी बहुआयामी (unidimensional) होती जाती है।

ईश्वरीय कृपासे जब मैं परम पूज्य गुरुदेवके पास गई तो उन्होंने भी पहली ही दृष्टिमें मेरी शंकाओंका समाधान मौनसे कर दिया

और उस दिनसे मेरी और उनकी चर्चा अधिकांशतः सूक्ष्म से ही हुई। यह उनकी कृपा थी।

– (पू.) तनुजा ठाकुर, सम्पादक

प्रेरक प्रसङ्ग

अन्तिम परीक्षा

शिक्षा ग्रहण करनेके लिए श्रीनिवासजीका आश्रम बहुत ही प्रसिद्ध था। घने जङ्गलमें उनका यह सुन्दर आश्रम था, जिसकी कीर्ति बहुत दूर-दूर तक फैली हुई थी। श्रीनिवासजीका शान्त-स्नेहपूर्ण स्वभाव, उनकी विद्वता, तपश्चर्या, त्यागमय जीवन, सदाचरणके कारण ही बहुत दूर-दूरसे कई विद्यार्थी शिक्षा ग्रहण करनेके लिए उनके आश्रममें आते थे। अनुशासन और स्वावलम्बन, उनके आश्रमके आधार थे। आश्रमसे कुछ ही दूरपर एक नदी थी। आचार्य सहित सभी विद्यार्थी उस नदीमें ही स्नान करने जाया करते थे। आश्रमका यह नियम था कि प्रातः काल सूर्योदयके पहले ही सभीको अपना नित्यकर्म पूरा कर लेना है। एक ओर जहां प्रति वर्ष नूतन विद्यार्थियोंको आश्रममें प्रवेश दिया जाता था तो वहीं दूसरी ओर जिनकी शिक्षा पूरी हो जाती, उन्हें सस्नेह विदाई दी जाती थी।

होलीका त्योहार निकट था। जिन विद्यार्थियोंकी अन्तिम परीक्षा हो चुकी थी, उन्हें अब घरकी स्मृतियां सताने लगी थी; किन्तु बिना आचार्यजीकी आज्ञाके वे कैसे जा सकते थे ? किसी प्रकार एक बालकने बहुत साहस करके आचार्यजीसे विनम्र निवेदन किया, "आचार्य जी ! हमने पूरे १० वर्ष आश्रममें रहकर आपसे शिक्षा ग्रहण की है, अब शिक्षा भी पूर्ण हो गई है और इन दस वर्षोंमें हम एक बार भी घर नहीं जा

पाए हैं। क्या आप हमें घर जानेकी अनुमति प्रदान कर सकते हैं ? जिससे हम आनेवाला होलीका त्योहार अपने घरोंमें मना सकें।

आचार्य उनकी ओर देखकर मुस्कुराते हुए बोले, "हां, यह बात आप सबने पहले क्यों नहीं बताई ? आपकी शिक्षाएं पूर्ण हो चुकी हैं, तो मैं आपको रोक नहीं सकता। आज सन्ध्याको ही आप सब घर जा सकते हैं।" ऐसा कहते हुए आचार्यजी भ्रमण करनेके निकल गए। सभी शिष्योंकी प्रसन्नताका ठिकाना न था। वे सभी आनन्दमें झूमने लगे और उन सबने घर जानेके उद्देश्यसे अपने उपयोगकी सामग्रीको समेटना आरम्भ कर दिया। सन्ध्याको एक अन्तिम नाव नदीके उस पार जानेके लिए निकलती थी, उसी नावसे घर जानेके लिए सभी उतावले हो गए। प्रस्थानकी पूरी सिद्धता (तैयारी) करके वे सभी अब आचार्यजीके आनेकी प्रतीक्षा करने लगे। जब आचार्यजी भ्रमण करके लौटे तो सभी शिष्योंने उन्हें प्रणाम किया और नदीकी ओर चलने लगे।

नित्यके मार्गसे ही सभी शिष्य नदीकी ओर जाने लगे; क्योंकि सूर्यास्त हो रहा था और उन सबके पांव बहुत गतिसे आगे चले जा रहे थे। सबके मनमें बस यही चल रहा था कि यदि अन्तिम नाव भी नदीसे छूट गई तो उन्हें कल प्रातः ही जाना पडेगा। चलते हुए उन सबने देखा कि मार्गमें बहुत सारे कांटे बिखरे हुए थे और इस मार्गसे आगे बढना सम्भव नहीं था। विलम्ब होनेके कारण सभी चिन्तित हो उठे; परन्तु उनमेंसे एक शिष्य, जिसका नाम सुव्रत था, वह कुछ भिन्न ही सोच रहा था।

उसने सब मित्रोंसे आग्रह करते हुए कहा, "मित्रो ! हमें इन कांटोंको मार्गसे हटा देना चाहिए। कल प्रातः अन्धकारमें

आचार्यजी और अन्य सहपाठी नदीपर स्नान करनेके लिए इसी मार्गसे आएंगे और अन्धकारके कारण सम्भवतः वे इन कांटोंको न देख पाएं। यदि हमने इन कांटोंको न हटाया तो उन्हें ये कांटे चुभेंगे; इसलिए पहले हमें इस मार्गसे ये सभी कांटे हटाने चाहिए; किन्तु सुव्रतका कथन सुननेका किसीको भी धैर्य नहीं था, वे सभी तो घर जानेके लिए बडे उतावले होते जा रहे थे। वे उस मार्गको छोड खेतोंसे होकर नदीकी ओर आगे बढने लगे। एक ओर जहां सभी खेतोंकी उपजको रौंदते हुए दौडते जा रहे थे, तो वहीं अकेला सुव्रत मार्गसे कांटे हटा रहा था, जिससे प्रातःकाल इस मार्गसे आनेवाले आचार्यजी और अन्य शिष्योंको वे न चुभें।

सुव्रतके अतिरिक्त शेष सभी शिष्य नदी किनारे पहुंच चुके थे। उन्होंने जब नावको अपनी आंखोंके समक्ष पाया तो वे बडे प्रसन्न हुए; किन्तु अचानक ही उन सबने वहां अपने आचार्यजीको देखा। उन्हें देख वे सब अचम्भेमें पड गए। आचार्यजीने उनका मार्ग रोक लिया और उनके मुखपर क्रोधके भाव स्पष्ट झलक रहे थे।

आचार्यजीने कहा, "प्रिय शिष्यो ! पुस्तकीय ज्ञानको रटकर और परीक्षा उत्तीर्णकर लेने मात्रसे ही शिक्षा पूरी नहीं हो जाती; हम जिस मार्गसे निकल रहे हैं, उस मार्गके कांटे भी हमें ही हटाने चाहिए। एक साधारणसा शिष्टाचार भी आपके आचरणमें नहीं आया। इससे तात्पर्य है कि अभी आपकी शिक्षा पूर्ण नहीं हुई है। यही तो आपकी अन्तिम परीक्षा थी और इसे उत्तीर्ण करनेसे पूर्व ही आप घर लौटनेको उतावले हो गए थे। अन्तिम परीक्षा लेनेके लिए ही मैंने पथोंपर कांटे बिखेर दिए थे। अकेला सुव्रत ही परीक्षा उत्तीर्ण कर पाया। उसे आनेमें विलम्ब होगा, यह सोच करके ही मैंने यह नाव रोकनेकी

सूचना दी थी । आज वह अकेला ही घर जा पाएगा । आचार्यजीका यह कथन पूरा होतेतक सुव्रत वहां पहुंच चुका था । सुव्रतकी प्रशंसा करते हुए उनकी आंखें भर आईं । उसे नावमें बैठाते हुए आचार्यजीने कहा, "प्रिय सुव्रत ! जीवनमें न केवल अपने, वरन दूसरोंके मार्गके कांटे दूर करनेवाला ही श्रेष्ठ होता है और तुमने हमारे मार्गके कांटे हटाकर अपना श्रेष्ठत्व सिद्ध किया । मेरा आशीर्वाद सदा तुम्हारे साथ रहेगा । आचार्यजीके वचन सुनकर सुव्रतकी आंखोंमें प्रसन्नताके आंसू झलक उठे और वह नावसे घरकी ओर प्रस्थान करने लगा ।

अन्य शिष्य सुव्रतका कहना न माननेसे पश्चाताप करने लगे और सभी शिष्य आचार्यजीके साथ आश्रमकी ओर लौट आए ।

घरका वैद्य

मूंगफली (भाग-७)

१८. रक्तकी कमीके लिए : मूंगफलीमें 'फोलेट'की प्रचुर मात्रा होती है । यह नये लाल रक्तकण बनानेके लिए आवश्यक होता है । लाल रक्तकण ही 'ऑक्सीजन'को सभी अङ्गोंतक पहुंचाते हैं । इनकी कमी होनेपर 'एनीमिया' अर्थात रक्तकी कमी हो सकती है, जो अनेक रोगोंकी कारण बन सकती है । महिलाओंके लिए गर्भावस्थामें 'फोलेट' अति आवश्यक होता है । इसकी कमीसे महिला तथा गर्भको हानि हो सकती है । नियमित मूंगफलीके सेवनसे इस प्रकारकी आशंकासे बचा जा सकता है ।

१९. पित्ताशयकी पथरीके लिए : गुर्देमें पथरी बननेके अतिरिक्त पित्ताशयमें भी पथरी बननेकी आशंका होती है ।

पित्ताशयमें पथरी बननेका मुख्य कारण 'कोलेस्ट्रॉल' होता है। मूंगफलीमें 'कोलेस्ट्रॉल' कम करनेकी प्रकृति होनेके कारण, यह पित्ताशयमें पथरी बननेकी आशंकाको भी न्यून करती है। वैज्ञानिक अनुसन्धानके अनुसार मूंगफलीका सेवन पुरुषों तथा स्त्रियों दोनोंके लिए लाभप्रद सिद्ध हो चुका है।

२०. बच्चोंके लिए 'फास्फोरस' : मूंगफलीमें पाए जानेवाले 'फास्फोरस' शरीरकी कोशिकाओंके बनने तथा इनकी देखभालके लिए सहायक होता है। यह 'कैल्शियम'के साथ मिलकर अस्थियों (हड्डियों) और दांतोंको सशक्त बनाए रखनेमें महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है। बच्चोंके लिए मूंगफली खाना बहुत लाभदायक हो सकता है। इससे बच्चोंके दांतोमें कोई दोष उत्पन्न नहीं होता। दांतोमें कृमि (कीडा) नहीं लगता और अस्थियां सबल बनती हैं। 'फास्फोरस' शरीरमें ऊर्जा उत्पादनके लिए भी आवश्यक होता है। यह अम्लके प्रभावको सन्तुलित करके रक्तका सन्तुलन सामान्य बनाए रखता है। 'हीमोग्लोबिन'के लिए भी 'फास्फोरस' एक आवश्यक तत्त्व होता है। इस प्रकार मूंगफलीके अनेक लाभ हैं।

उत्तिष्ठ कौन्तेय

आर्थिक अपराधकी पूछताछ होनेपर रॉबर्ट वाड्राने प्रकट की राजनीतिमें आनेकी इच्छा

प्रथम बार वाड्राकी राजनीतिक आकांक्षाएं सामने नहीं आई हैं। २०१९ में भी सङ्केत दिया था कि वह लोगोंकी सेवा करनेमें बडी भूमिकाके लिए सिद्ध हैं। इस वक्तव्यके कुछ ही घण्टों पश्चात ही उत्तर प्रदेशके मुरादाबादमें उनके नामके फलक (पोस्टर) भी लगाए गए थे, जिसमें मुरादाबाद लोकसभा क्षेत्रसे चुनाव लडनेका अनुरोध किया गया था।

गांधी परिवारद्वारा देशपर राहुल गांधीको थोपनेके पश्चात अब कांग्रेस अध्यक्ष सोनिया गांधीके जमाताने राजनीतिमें उतरने और चुनाव लडनेकी इच्छा प्रकट की है। रॉबर्ट वाड्राने गुरुवारको राजनीतिमें सम्मिलित होनेकी इच्छा प्रकट करते हुए कहा कि उन्हें लडनेके लिए संसदमें रहना होगा। उल्लेखनीय है कि वाड्राने 'बेनामी सम्पत्ति' प्रकरणमें आयकर विभागद्वारा की गई कडी पूछताछके पश्चात यह वक्तव्य दिया है।

आजकी संसद और राज्यकी विधानसभाएं अपराधियोंका 'अड्डा' बनती जा रही हैं। विधिके प्रावधानोंसे बचनेके लिए अपराधियोंको संसद एवं विधानभवन सुरक्षित लगते हैं, जहां रहकर पुलिस व अन्य जांच दल एवं प्रशासनकी प्रताडनासे बच जाते हैं। भारतमें सभी राजनीतिक दल अपराधियोंको संरक्षण देते हैं, जो बहुत ही दुर्भाग्यपूर्ण है। साथ ही सभी सत्ताधारी दल जांच संस्थाओंका अपनी सुविधानुसार जनताको मूढ बनानेके लिए कार्यवाहीके नामपर विरोधी दलोंके विरुद्ध शस्त्रके रूपमें प्रयोग करते हैं। रॉबर्ट वाड्रा भी अब जांचसे बचने या उसे टालनेके लिए ऐसा ही सुरक्षित स्थान ढूंढ रहे हैं। यदि ऐसा भ्रष्टाचारी कार्यवाहीसे बच जाता है या संसद पहुंच जाता है, तो यह देशका दुर्भाग्य होगा। (०८.०१.२०२१)

****

मोहम्मद इजहारने बन्दूक दिखाकर अवयस्क सहपाठीका साथियोंके साथ मिलकर किया सामूहिक बलात्कार

बिहारके मुजफ्फरपुरमें १०वीं कक्षामें पढनेवाली एक बालिकाको बन्धक बनाकर बन्दूककी नोकपर सामूहिक

बलात्कारके आरोपमें २२ वर्षीय मोहम्मद इजहारको पुलिसने बुधवार, ६ जनवरीको बन्दी बनाया है।

पुलिसने कहा कि पीडिताकी आयु १६ वर्षके आसपास है और वह दसवीं कक्षामें पढती है। सामूहिक बलात्कारका यह प्रकरण जनपदके सकरा थाना क्षेत्रमें गत ६ दिसम्बरका है। समाचार पत्र 'टाइम्स ऑफ इंडिया'के ब्योरेके अनुसार, पुलिसने कहा कि प्रकरणकी सूचना पुलिसको मङ्गलवार, ५ जनवरीको रात्रिमें दी गई, जिसके पश्चात मुख्य आरोपी मोहम्मद इजहारको बन्दी बनाया गया।

पीडिताके परिवादपर (शिकायतपर) महिला थानेमें प्रकरणके सम्बन्धमें ५ युवकोंके विरुद्ध प्राथमिकी प्रविष्ट की गई थी। पुलिसने कहा कि पांच आरोपियोंपर प्रकरण प्रविष्ट किया गया है।

बताया जा रहा है कि इससे पूर्व पीडिताका परिवार सकरा थानेको इसकी सूचना दे चुका था और प्रकरणके अगले दिन वो एक आरोपीको पकडकर पुलिसको सौंप चुके थे। आरोप है कि सकरा पुलिसने इस प्रकरणको गम्भीरतासे न लेते हुए पीडित परिवारको फटकार भी लगाई।

जिहादियोंद्वारा ये कुकर्म इसलिए बढते जा रहे हैं; क्योंकि शासन तथा पुलिस इन जिहादियोंको अनदेखा कर रहे हैं और इस विषयपर अत्यन्त गम्भीरतासे कार्य नहीं कर रहे हैं, अत: सभी हिन्दुओंको शासन तथा पुलिसपर निर्भर रहनेके स्थानपर महिलाओं तथा बालिकाओंकी सुरक्षाके लिए स्वयं आगे आना होगा।

विवाहके पश्चात हिन्दू प्रेमीने नहीं स्वीकारा इस्लाम तो अपने माता पिताके घर लौटी नाजरा

उत्तर प्रदेशके औरैया जनपदमें एक १९ वर्षीय मुसलमान युवती नाजरा हिन्दू युवकके साथ लुप्त हो गई थी। पुलिसको प्रकरणका परिवाद युवतीके परिवारद्वारा अपहरणके अन्तर्गत किया गया। युवती अब अपने घर लौट चुकी है तथा अपहरणके प्रकरणको निरस्त कर दिया गया है। युवतीका हिन्दू युवकके साथ प्रेमप्रसंग अत्यधिक समय से चल रहा था। परिजनके विरोधके कारण दोनोंने एक साथ घर छोड दिया था तथा औरैया जनपदके आर्य समाज मन्दिरमें विवाह कर लिया। 'सब इंस्पेक्टर' देवी सहाय वर्माके अनुसार, नाजरा नामक मुसलमान युवतीने पुलिससे चर्चाके मध्य बताया कि वह अपनी इच्छा से २० वर्षीय युवक आकाश कुशवाहाके साथ गई थी। बीहड क्षेत्रके कुलगांवका निवासी आकाश कुशवाह चलभाषकी आपणि (दुकान) चलाता है। आकाश और नाजराने एक दूसरेसे २१ दिसम्बर २०२० को विवाह कर लिया था; परन्तु नाजराने न्यायाधीशके सम्मुख अपना वक्तव्य देते हुए कहा कि वह केवल एक ही स्थितिमें आकाशके साथ रहेगी, यदि वह इस्लाम स्वीकार कर लेता है। 'मीडिया' प्रतिवेदनके अनुसार, युवतीके भाईने हिन्दू युवकपर आरोप लगाया था कि वह उसकी बहनका अपहरण करके ले गया है तथा युवकके भडकानेपर बहन ८० सहस्र (हजार) रुपए नकद व आभूषण भी घरसे ले गई है। इस परिवादके आधारपर पुलिसने 'आईपीएस'की धारा ३६६ के अन्तर्गत अभियोग प्रविष्ट किया था।

समाचार स्पष्ट करता है कि किस प्रकार मुसलमानोंमें

बाल्यकालसे ही कट्टरपन्थकी घुट्टी दी जाती है, जिसके फलस्वरूप वे अपने धर्मको कभी नहीं त्यागते। हिन्दुओंको इनसे ये सीखना चाहिए कि कैसे अपने धर्मपर अडिग रहा जाता है ? यद्यपि ये धर्मान्ध होते हैं; अतः ऐसी आतङ्की मानसिकतावालोंसे हिन्दुओंने दूर रहना चाहिए।

****

चीनने विश्व स्वास्थ्य संगठन जांच दलको अपने देशमें आनेसे रोका

विश्वभरमे भारी विनाश करनेवाली इस घातक महामारीको लेकर कई देश सीधे-सीधे चीनको उत्तरदायी बताते आ रहे हैं; परन्तु झूठका आश्रय लेते हुए चीनने इससे सदैव मना किया है। इस मध्य सूचना मिली है कि विश्व स्वास्थ्य संगठनका एक समूह चीनके वुहान नगरमें उपजे इस सङ्क्रमणकी उत्पत्ति व प्रकोपके आरम्भिक चरणोंकी जांच करनेके लिए निकल चुका था; परन्तु इस अन्तरराष्ट्रीय विशेषज्ञ दलको चीनद्वारा आनेकी अनुमति नहीं दिए जानेपर जेनेवामें एक 'प्रेस' समूहमें 'डब्ल्यूएचओ' प्रमुख टेड्रोस एड हैनम घेब्रयेसिसने कहा कि हमें यह जानकर 'धक्का' लगा कि इस जांच दलको चीनने अबतक अपने यहां आनेकी अनुमति नहीं दी।

टेड्रोसने चीनके वरिष्ठ अधिकारियोंको स्पष्ट किया कि यह 'मिशन डब्ल्यूएचओ' और अन्तरराष्ट्रीय समूहकी प्राथमिकतामें है और दलके प्रवेशको सुनिश्चित करनेका आग्रह किया है, जिससे 'मिशन' शीघ्रातिशीघ्र आरम्भ हो सके।

'कोरोना' सङ्क्रमणसे निपटनेको लेकर विश्व स्वास्थ्य सङ्गठनपर भी प्रश्न उठते रहे हैं। 'डब्ल्यूएचओ'से अमेरिकाकी रुष्टता इस सीमातक बढी कि उसने इस वैश्विक संस्थासे

अपना सम्बन्ध ही तोड लिया।

चीनके इस नकारात्मक व्यवहारसे उसकी मंशाको लेकर एक बार पुनः प्रश्न उठने लगे हैं कि क्या वास्तवमें 'कोविड-१९'को लेकर ऐसा कुछ है, जिसे वह सभी देशोंसे छुपा रहा है ? 'कोविड-१९' उत्पत्तिकी जांचके विषयमें जानेवालोंको उद्विग्न करने, उनका पीछा करने, उनका मार्ग रोकने और विगत दिवसोंमें चीनमें कई छोटी प्रयोगशालाओंको बन्द किए जानेकी सूचना प्राप्त हुई है।

ऐसे कुटिल देशसे यही अपेक्षाकी जा सकती है; परन्तु सारा विश्व जानता है कि सङ्क्रमण चीनसे फैला है। सभी देश चीनके विरोधमें मुखर होकर इनसे सम्बन्ध समाप्तकर मानवताको बचाएं !

****

हिन्दू लडकियोंसे विश्वासघात करनेके उद्देश्यसे अनमोल बने जिहादी आलमको ढूंढ रही उत्तर प्रदेश पुलिस

उत्तर प्रदेश पुलिसके अनुसार एक युवक आलम अंसारीने अपना 'इंस्टाग्राम अकाउंट' 'अनमोल मिश्रा' नामसे बनाया। इसमें उसने 'आई लव इण्डियन आर्मी' भी लिखा, जिससे कि यह खाता सत्य लगे।

इसकेद्वारा एक हिन्दू अवयस्क लडकीसे सम्पर्ककर, उसे प्रेमजालमें फंसाकर, उसे लेकर वह २ जनवरी २०२१ को भाग गया।

उसका वास्तविक नाम आलम अंसारी है तथा वह शोहरतगढ, जनपद सिद्धार्थ नगर, उत्तरप्रदेशका निवासी है। पुलिसको ज्ञात हुआ है कि वह सामाजिक जालस्थानोंद्वारा हिन्दू लडकियोंको प्रेम जालमें फंसाता था।

जब २ जनवरी २०२१ को अवयस्क लडकी घर नहीं लौटी, तो उसके परिजनने पुलिसमें परिवाद प्रविष्ट किया । पुलिसने उन दोनोंको ढूंढनेके लिए पुलिस अधिकारियोंके एक विशेष गुटका गठन किया है । दोनोंके भ्रमणभाषकी 'लोकेशन' ज्ञात की जा रही है । जनवरी ३ को उनके भ्रमणभाष बलरामपुरके राधाकृष्ण मन्दिरके निकट होना ज्ञात हुआ था; परन्तु पुलिस पहुंचनेसे पूर्व ही वे वहांसे पलायन कर गए थे । पुलिसका अनुमान है कि किसीने उन्हें पुलिसके आनेका समाचार दे दिया था । पुलिस आलम अंसारीके अन्य सामाजिक जालस्थानोंके खातोंकी जांच कर रही है ।

पिछले कुछ वर्षोंमें 'लवजिहादकी अनेक घटनाएं ज्ञात हुई हैं, जिनमें आरोपी छद्म परिचय देकर हिन्दू युवतियोंसे विश्वासघात करते हैं । उन्हें प्रेम जालमें फंसाकर उनका अपहरण, यौन शोषण तथा बलपूर्वक धर्मपरिवर्तन करवाते हैं । उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेशमें 'लवजिहाद'पर कठोर विधान गठित किए गए हैं ।

विधान बनानेपर भी जिहादी ऐसे कृत्य कर ही रहे हैं; क्योंकि यह उनकी वृत्ति है । अतएव हिन्दुओंको ही अपनी सन्तानोंको इनसे सतर्क रहनेकी शिक्षा देनी होगी । (०८.०१.२०२१)

****

प्रणब मुखर्जीकी पुस्तकमें नेपालके भारतसे पृथक होनेका कारण बताया नेहरूको

भारतके प्रथम प्रधानमन्त्री जवाहरलाल नेहरू यदि चाहते, तो आज नेपाल भी भारतका अंग होता; किन्तु उन्होंने प्रस्तावको ठुकरा दिया । यह उल्लेख दिवङ्गत पूर्व राष्ट्रपति

प्रणब मुखर्जीने अपनी पुस्तकमें किया है। उनकी आत्मकथा 'द प्रेसिडेंसियल ईयर्स'के अनुसार, नेपालके तत्कालीन राजा त्रिभुवन बीर बिक्रम शाहने नेहरूको प्रस्ताव दिया था कि नेपालको भी भारतका एक प्रान्त बना दिया जाए; परन्तु नेहरूने इसे ठुकरा दिया।

इस पुस्तकके अध्याय ११ का मुख्य बिन्दु है, 'मेरे प्रधानमन्त्री : अलग-अलग स्टाइल्स, अलग-अलग मिजाज।' इसमें उन्होंने लिखा है कि यदि तब जवाहरलाल नेहरूके स्थानपर इंदिरा गांधी प्रधानमन्त्री होतीं, तो वो इस अवसरको नहीं छोडतीं और इसे स्वीकार लेतीं। उन्होंने स्मरण दिलाया है कि इन्दिराने सिक्किमके प्रकरणमें भी ऐसा ही किया था।

प्रणब मुखर्जीका कहना है कि उन सभीके कार्य करनेके ढंग भिन्न थे। लाल बहादुर शास्त्रीके कार्य करनेका ढंग उनके पूर्ववर्ती नेहरूसे भिन्न था। उन्होंने लिखा है कि आन्तरिक सुरक्षा, विदेश प्रकरण और प्रशासनको लेकर भी प्रधानमन्त्रियोंका भिन्न दृष्टिकोण होता है, भले ही वो समान दलसे ही क्यों न आते हों।

मुखर्जीने लिखा है कि नेहरूने नेपालके साथ राजनयिक ढंगसे व्यवहार किया। वो लिखते हैं, "नेपालमें राणाओंके शासनको राजतन्त्रसे स्थानान्तरित किया गया। नेहरू चाहते थे कि वहांपर लोकतन्त्र हो। नेहरूका कहना था कि नेपाल एक स्वतन्त्र राष्ट्र है और उसे ऐसे ही बने रहना चाहिए; इसीलिए उन्होंने राजा बीर बिक्रम शाहके प्रस्तावको ठुकरा दिया और नेपाल भारतका भाग नहीं बन पाया।"

राजा वह नहीं, जो अपनी स्वाभावानुसार कार्यशैलीपर चले, वरन वह है, जो सदैव प्रजा व मातृभूमिके

हितको सर्वोपरि रखे । यदि नेपालको भारतमें मिला लिया जाता, तो आज चीन उसकेद्वारा हमारा दोहन करनेका प्रयास न करता । होना यह चाहिए था कि नेपालको मिलाकर सारे गणराज्यको हिन्दू राष्ट्र घोषित किया जाता; परन्तु स्वयंके स्वभाव व अहंकारसे प्रेरित अदूरदर्शी विचारधाराका परिणाम आज सारा भारत भोग रहा है, जिसका समाधान अब भारत के हिन्दू राष्ट्र बननेपर ही होगा।

****

'ऑल्ट नयूज'की सह-संस्थापिकाने फैलाया झूठा समाचार, प्रधानमन्त्री मोदीपर आरोप मढनेका किया प्रयास

'ऑल्ट नयूज'की सह-संस्थापिका निर्झरी सिन्हाने एक बार पुनः झूठा समाचार फैलाया । उसने अमेरिकाके उग्र प्रदर्शनोंके एक 'वीडियो'में प्रधानमन्त्री मोदीको ट्रम्प-प्रचारकके समान जोडा। समाचारमें जोडते हुए प्रधानमन्त्री मोदीको ऐसा कहते हुए दिखाया गया, "भारतके भीतर हम राष्ट्रपति 'डोनाल्ड ट्रंप'से अच्छे जुडे हुए हैं। उम्मीदवार 'ट्रंप'के शब्द, अबकी बार ट्रंप सरकार।"

इसपर सैम जावेदने ट्वीट किया, "भूलिएगा मत।" यह वही जावेद है, जो हिन्दुओं और देशके शासनके प्रति अपनी घृणा फैलाते दिखाई देता है और झूठी अफवाहें फैलाता है कि मोदीने 'ट्रंप'के लिए प्रचार किया था; जबकि मोदीने न ही कभी ट्रंपके लिए प्रचार किया था और न ही अमेरिकाके चुनावोंमें हस्तक्षेप किया था। जावेद केवल भ्रम फैलानेमें प्रवीण है।

२०१६ में मोदीने 'टेक्सस'के भारतीयोंको स्मरण कराया था कि ट्रंपने अपने शासन हेतु प्रचारके लिए यह उद्घोष

'अबकी बार ट्रंप-सरकार' स्वयं ही चुना है। 'अबकी बार मोदी सरकार'के उद्घोषको लेकर ही ट्रंपने ऐसा वाक्य बनाया है। इन्हीं शब्दोंको लेकर 'ऑल्टनयूज'ने 'ट्रंपके शब्दोंको मोदीपर मढनेका प्रयास किया। 'ट्रंप'ने कहा था कि हिन्दुओंके पास 'व्हाईट हाउस'में एक मित्र होगा। किस प्रकार 'ट्रंप'ने यह उद्घोष बनाया, यह तो मोदीने लोगोंको केवल स्मरण कराया था। 'ऑल्ट नयूज', जो कि झूठे समाचारोंका विश्लेषण करता रहा है, अब स्वयं ही झूठ बोल रहा है। इसकी सह-संस्थापिका निर्झरी सिन्हाको भी समाचारोंकी सच्चाईका कोई ज्ञान नहीं है।

कनाडाके प्रधानमन्त्रीद्वारा भारतके किसान आन्दोलनपर निरर्थक टिप्पणी की गई थी। उसका बचाव करते हुए, 'ऑल्ट नयूज'ने 'ट्रंप'के इस प्रचार-वाक्यको मोदीके साथ जोडते हुए, लोगोंका ध्यान परिवर्तित करनेका प्रयास किया और मोदी तथा भारतीय शासनके प्रति अपनी घृणा दर्शाई।

ऑल्ट न्यूजके समान कांग्रेस तथा ऐसे और भी अनेक देशद्रोही 'मीडिया गिरोह' हैं, जिन्होंने प्रधानमन्त्रीके प्रति घृणित समाचार और 'अफवाहों'को फैलानेमें कोई अवसर नहीं छोडा। ऐसे देशद्रोही पत्रकारोंके अपराधके सम्बन्धमें विधान बनाकर इन्हें दण्डित किया जाना चाहिए। (०८.०१.२०२१)

****

कर्नाटकमें निर्धन कन्याओंको २५००० व पुजारियोंसे विवाह करनेपर मिलेंगे ३ लाख रुपए

गत वर्ष ही येदियुरप्पा शासनद्वारा स्थापित 'कर्नाटक

राज्य ब्राह्मण विकास बोर्ड'के अन्तर्गत आर्थिक रूपसे निर्धन 'EWS' ब्राह्मणोंके लिए 'पायलट प्रोजेक्ट'के रूपमें दो योजनाएं आरम्भ की गई हैं, 'अरुंधती' और 'मैत्रेयी' । इन योजनाओंका उद्देश्य इस स्तरकी नवविवाहिताओंको आर्थिक लाभ उपलब्ध कराना है । कर्नाटकमें ६ कोटिकी जनसङ्ख्यामेंसे लगभग ३% ब्राह्मण समुदायसे हैं।

'बोर्ड'के अनुसार, प्रथम योजना 'अरुंधति'के अन्तर्गत ५५० निर्धन ब्राह्मण युवतियोंको विवाहके लिए २५००० रुपए प्रत्येकके अनुसार दिए जाएंगे, जबकि द्वितीय योजना, 'मैत्रेयी' राज्यमें निर्धन ब्राह्मण पुजारीसे विवाह करनेपर २५ युवतियोंको ३ लाख रुपए प्रत्येकके अनुसार 'बॉण्ड' दिया जाएगा, जो कि ३ वर्षोंतक उपयोग किए जा सकेंगे।

'बोर्ड'के अध्यक्ष एचएस सचिदानंद मूर्तिने कहा कि विवाह करनेवाली युवतियोंको कुछ अन्य नियमोंको भी पूरा करना होगा । जैसे, ब्राह्मण परिवार आर्थिक रूपसे दुर्बल श्रेणीका होना चाहिए । साथ ही, विवाह करनेवाली युवतीका यह प्रथम विवाह होना चाहिए और उन्हें एक निश्चित अवधितक विवाहित रहना ही होगा।

'बोर्ड'के अध्यक्षने कहा कि प्रारम्भमें 'मैत्रेयी' ऐसी युवतियोंके लिए आरम्भ किए जानेकी योजना थी, जो किसी निर्धनता रेखासे नीचे जीवन यापन करनेवाले ब्राह्मण, किसान, पाकशास्त्री (रसोइये) अथवा पुजारीसे विवाह करती; परन्तु सर्वेक्षणके पश्चात यह ज्ञात हुआ कि पुजारी वर्ग आर्थिक स्थितिपर अत्यन्त दुर्बल हैं और इसलिए इस योजनाको पुजारियोंके लाभके लिए चलानेकी घोषणा की।

'रिपोर्ट्स' के अनुसार, 'मैत्रेयी' योजनाके अन्तर्गत किसी

भी विवाहित जोडेको ३ लाख रुपयेके 'बॉण्ड'का पूरा लाभ उठानेके लिए ३ वर्षोंतक विवाहित रहना होगा और विवाहके प्रत्येक एक वर्षके अन्तमें १ लाख रुपएकी आंशिक राशि दम्पतिको दी जाएगी।

उल्लेखनीय है कि कर्नाटकके पूर्व मुख्यमन्त्री एचडी कुमारस्वामीने वर्ष २०१८-१९ में अपने कार्यकालके मध्य 'ब्राह्मण विकास बोर्ड'के गठनके साथ ही उसे २५ कोटि 'बजट फण्ड' उपलब्ध करानेकी बात कही थी।

अत्यन्त हर्ष की बात है कि कर्नाटक शासनने निर्धन ब्राह्मणोंके हितमें कोई योजना निकाली है। आजतक तो इस देशमें जिहादियों व ईसाइयोंके लिए ही योजनाएं सुनी हैं; परन्तु येदियुरप्पा ब्राह्मणोंपर ध्यान दें रहे हैं, इसके लिए मुख्यमन्त्री महोदय अभिनन्दनके पात्र हैं।

****

वैदिक उपासना पीठद्वारा कुछ आवश्यक सूचनाएं

१. वैदिक उपासना पीठद्वारा विजयादशमीसे अर्थात दि. २५/१०/२०२० से ऑनलाइन बालसंस्कारवर्गका शुभारंभ हो चुका है। यह वर्ग प्रत्येक रविवार, त्योहारोंको एवं पाठशालाके अवकाशके दिन प्रातः १० से १०:४५ तक होगा। इस वर्गमें ७ वर्षसे १५ वर्षकी आयुतकके बच्चे सहभागी हो सकते हैं। यदि आप अपने बच्चोंको इसमें सम्मिलित करने हेतु इच्छुक हैं तो पञ्जीकरण हेतु कृपया 9717492523, 9999670915 के व्हाट्सऐप्पपर सन्देशद्वारा सम्पर्क करें।

२. वैदिक उपासना पीठके लेखनको नियमित पढनेवाले पाठकोंके लिए निःशुल्क ऑनलाइन सत्सङ्ग आरम्भ किया

जा चुका है।

आनेवाले सत्संगका विषय व समय निम्नलिखित है :

सङ्ख्या सीमित होनेके कारणकृपया अपना पञ्जीकरण यथाशीघ्र कराएं । इस हेतु ९९९९६७०९१५ (9999670915) या ९७१७४९२५२३ (9717492523) के व्हाट्सएप्पपर अपना सन्देश भेजें। कृपया पञ्जीकरण हेतु फोन न करें।

अगले कुछ सत्सङ्गोंकी पूर्व सूचना :

अ. शिष्यके गुण, ११ जनवरी, रात्रि ९.३० बजे

आ. नमस्कारसे सम्बन्धित शास्त्र, १५ जनवरी, रात्रि ९.३० बजे

इ. नामजप कब, कहां और कितना करें ? १९ जनवरी, रात्रि ९.३० बजे

ई. योगनिद्रा २५ जनवरी रात्रि ७.३० बजे

३. वैदिक उपासना पीठद्वारा प्रत्येक दिवस भारतीय समय अनुसार रात्रि नौसे साढे नौ बजे 'ऑनलाइन सामूहिक नामजप'का आयोजन किया जा रहा है, जिसमें साधना हेतु मार्गदर्शन भी दिया जाएगा, साथ ही आपको प्रत्येक सप्ताह 'ऑनलाइन सत्सङ्ग'के माध्यमसे वैयक्तिक स्तरपर भी साधनाके उत्तरोतर चरणमें जाने हेतु मार्गदर्शन दिया जाएगा, यदि आप इसका लाभ उठाना चाहते हैं तो आप हमें ९९९९६७०९१५ (9999670915) या ९७१७४९२५२३ (9717492523) पर "मुझे सामूहिक नामजप गुटमें जोडें", यह व्हाट्सऐप्प सन्देश भेजें !

४. जो भी व्यक्ति वैदिक उपासना पीठके तत्त्वावधानमें अग्निहोत्र सीखना चाहते हैं वे ९९९९६७०९१५ के

व्हाट्सऐप्पपर अपना सन्देश इसप्रकार भेजें ,'हमें कृपया अग्निहोत्र गुटमें सम्मिलित करें।'

५. कोरोना जैसे संक्रामक रोग एवं भविष्यकी आपातकालकी तीव्रताको ध्यानमें रखते हुए वैदिक उपासना पीठद्वारा संक्षिप्त दैनिक हवन कैसे कर सकते हैं ?, इस विषयमें १५ अगस्तसे एक नूतन उपक्रम आरम्भ किया जा रहा है। इसमें अग्निहोत्र समान इसे सूर्योदय या सूर्यास्तके समय ही करनेकी मर्यादा नहीं होगी, इसे आप एक समय या सप्ताहमें जितनी बार चाहे, कर सकते हैं । यदि आप सीखना चाहते हैं तो ९९९९६७०९१५ पर हमें इस प्रकार सन्देश भेजें, "हम दैनिक हवनकी सरल विधि सीखना चाहते हैं, कृपया हमें यथोचित गुटमें जोडें।"

प्रकाशक : Vedic Upasana Peeth
जालस्थल : www.vedicupasanapeeth.org
ईमेल : upasanawsp@gmail.com
सम्पर्क : + 91 9717492523 / 9999670915